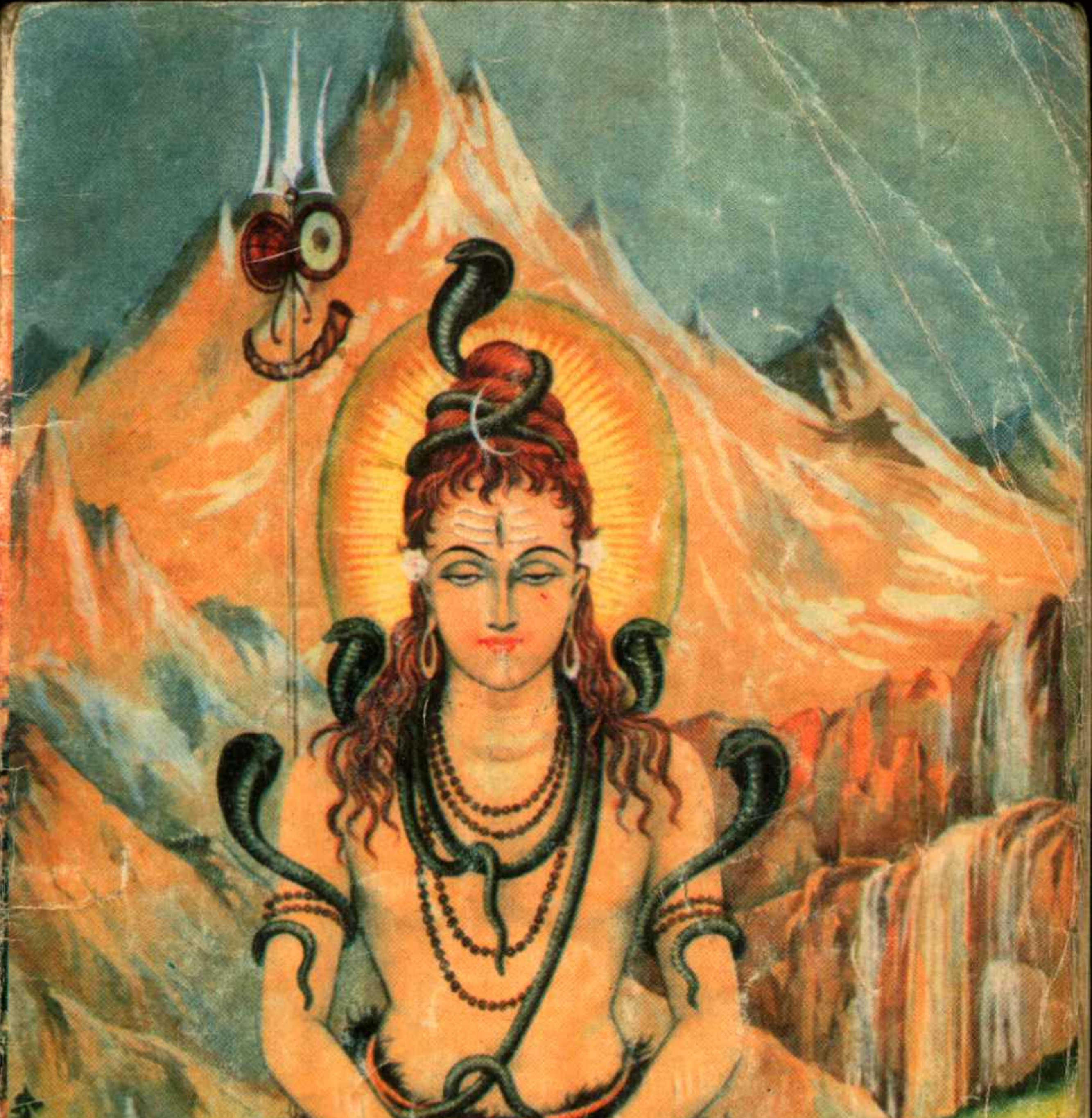

श्री परशिव प्रार्थना
और
श्री शिव महिम्न स्तोत्र

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

(हिन्दी/अंग्रेज़ी अनुवाद सहित)

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

श्री परशिव प्रार्थना
और
श्री शिव महिम्न स्तोत्र

(हिन्दी/अंग्रेजी अनुवाद सहित)

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

मौन

मौन वह है, जिसके भीतर विचार नहीं उठते। मौन वह है, जो संकल्प-विकल्प के परे पहुँच गया है। मौन वह स्थिति है, जो अहंकार के विनाश के बाद उत्पन्न होती है। यह वह अवस्था है, जो अंधकार और प्रकाश, दोनों के पार है, फिर भी हम उसे प्रकाश कह कर ही प्रकट करते हैं, क्योंकि ऐसा कोई शब्द नहीं है, जो उस स्थिति का ठीक-ठीक वर्णन कर सके।

.........महर्षि रमण

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

"न यावत् उमानाथ पादारविन्दम्
भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत् सुखं शांतिसंतापनाशम्
प्रसीद प्रभो! सर्वभूताधिवासम् ॥"

"न जानामि योगं जपं नैव पूजाम्
नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् ।
जरा-जन्म-दुःखौघ-तातप्यमानम्
प्रभो! पाहि आपन्नमामीश शंभो ॥" (तुलसीदास)

हे उमानाथ! **"जब तक"** कोई व्यक्ति आपके चरणकमलों में शरण नहीं ले लेता और आपका भजन नहीं करता **"तब तक"** उस व्यक्ति को न तो इस संसार में और न ही मरणोपरांत शांति ही मिलती और न ही उसके संताप का नाश ही होता है।

हे सभी प्राणियों के हृदय में आत्मा रूप से रहने वाले प्रभो! आप मुझ पर प्रसन्न होइए।

हे प्रभो! मुझे न तो योग आता है न जप और न तुम्हारी पूजा ही सब कुछ देने वाले हे शंकर! मैं आपको सदा सर्वदा प्रणाम करता हूं। हे प्रभो मैं जन्म से वृद्धावस्था तक अनेक दुःखों की आग में जल रहा हूँ। हे ईश्वर! हे शंभो! इन दुःखों से मेरी रक्षा करो। आपको बार-बार प्रणाम है।

O Śiva, the Spouse of Parvati !

"Unless and until" One pray to you, One cannot get peace in this world or hereafter. Hence, One's calamities are not removed. O Śiva! be pleased and gracious to me. I sincerely offer my prayers and salutation to you who lives in the hearts of all creatures.

O Lord ! I donot know meditation, repitition of name or worship. I always offer my admirations and adorations to you. I pray you to protect me from all troubles from birth to old age. O my God! I pray to you in all sincerity and humility.

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

आत्मकथ्य

अपने छात्र जीवन में मैं प्राय: प्रतिवर्ष श्री महाशिव रात्रि के अवसर पर चांदनी चौक के गौरीशंकर मंदिर में रातभर जागरण करता था। उस समय मुझे भक्तों द्वारा इस स्तोत्र का पाठ सुनकर बहुत ही आनंद आता था।

मेरे पूज्य गुरुदेव को भी यह स्तोत्र अत्यंत प्रिय था। एक दिन वे बोले कि, "इस स्तोत्र के जितने भी संस्करण मिलते हैं, वे सब खरीद लाओ।" तब बाजार में मुझे मात्र तीन-चार संस्करण ही मिले।

महरौली के निकट ही जौनापुर ग्राम है। यहां एक संकटमोचन हनुमान मंदिर है, यहीं श्री सेवानंद सरस्वती जी महाराज की कुटिया है। पूजनीय महाराज जी ने विश्वविख्यात श्री शिवानंद सरस्वती जी महाराज से दीक्षा ली है। और महान सिद्ध संत नीम करौरी बाबा के प्यारे बेटे (शिष्य) हैं। हमारे गुरु महाराज ने देह त्याग के पश्चात् स्वामी सेवानंद सरस्वती जी को स्वप्न में दर्शन दिए और यह आदेश दिया कि आप नित्य शिव महिम्न स्तोत्र का और गीता के पन्द्रहवें अध्याय का पाठ करें। इन्हीं स्वामी जी की प्रेरणा से मैंने और सब बच्चों ने नित्य पाठ से इसे कंठस्थ कर लिया। पूज्य पिताजी जब यह पाठ सुनते थे तो बार-बार सुनने की उनकी इच्छा रहती थी।

श्री रामकृष्ण परमहंस देव तो इस स्तोत्र को पढ़ते-सुनते ही समाधि में खो जाते थे। उनकी माताजी चंद्रमणि देवी ने बताया कि श्री रामकृष्ण के जन्म से पूर्व एक दिन जब वे शिव पूजन कर रही थी तो अचानक ही शिवलिंग से एक ज्योति निकलकर उनके उदर में समा गई जिससे वे गर्भवती हो गई। इसी प्रकार बचपन में श्री रामकृष्ण परमहंस को एक बार शिव का अभिनय करने को विवश होना पड़ा किंतु जब उन्हें शिव के रूप में सजाया गया तो उन्हें तत्काल ही समाधि लग गई और फिर अभिनय तो धरा ही रह गया।

देवताओं ने भगवान शिव और विष्णु दोनों की ही आराधना की, किन्तु प्राय: चालाक राक्षसों ने शिव को ही अपनाया क्योंकि वे इस रहस्य को जानते थे कि शिव ''आशुतोष'' हैं बहुत ही शीघ्र थोड़ी सी ही पूजा से ही प्रसन्न हो जाते हैं। आजकल प्राय: भोले भाले भक्त यह जानना चाहते हैं कि शिव बड़े हैं या विष्णु? इसके उत्तर में धर्म सम्राट पूजनीय स्वामी करपात्री जी महराज ने अनेक शास्त्रों के प्रमाण देकर यह सिद्ध कर दिया कि शिव और विष्णु एक ही हैं और जो इन दोनों में भेद करता हैं वह अवश्य ही नरक में जाता है।

भगवान श्री राम ने रावण वध से पूर्व रामेश्वरम् में भगवान् शंकर का पूजन किया था, इस तथ्य से तो सभी परिचित हैं किंतु बहुत कम व्यक्ति ही यह जानते हैं कि भगवान् श्री कृष्ण भी महान् शिव भक्त थे! आज भी वृंदावन में भगवान् शंकर के प्रसिद्ध गोपेश्वर महादेव के मंदिर के दर्शन किए जा सकते हैं। महाभारत युद्ध से पूर्व अपने प्रिय सखा अर्जुन को श्री कृष्ण ने ही प्रेरणा दी थी कि भगवान् शंकर की तपस्या करें। अर्जुन के तप से प्रसन्न हो कर भगवान् आशुतोष शिव ने उन्हें दिव्य पाशुपत अस्त्र प्रदान किया था। कुरुक्षेत्र में आज भी प्रख्यात स्थाणेश्वर महादेव का मंदिर है, जहाँ श्री कृष्ण ने महाभारत के युद्ध से पूर्व विजय की कामना से पांडवों सहित भगवान शंकर का पूजन किया था। स्वयं श्री कृष्ण ने महर्षि उपमन्यु को गुरू बनाकर शिव-आराधना के लिए दीक्षा ली तथा भोले शंकर को कठोर तप से प्रसन्न कर उनसे दिव्य वर प्राप्त किए। फलस्वरूप प्रद्युम्न जैसे प्रतापी पुत्र का जन्म हुआ। इस शिव महिम्न स्तोत्र को पूज्य पिताजी ने हिंदी अनुवाद सहित और हमारी बुआ जी श्रीमती जयमंगला जी ने इसे हिंदी कविता में प्रकाशित किया था। इतना होने पर भी हमारी प्यास न बुझी तो अब यह पूज्य पिताजी की पुण्यतिथि (शिवरात्रि) के अवसर पर इसे हिंदी और अंग्रेजी अनुवाद सहित पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ। आशा है, भगवान शंकर इस पूजन से प्रसन्न होंगे।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

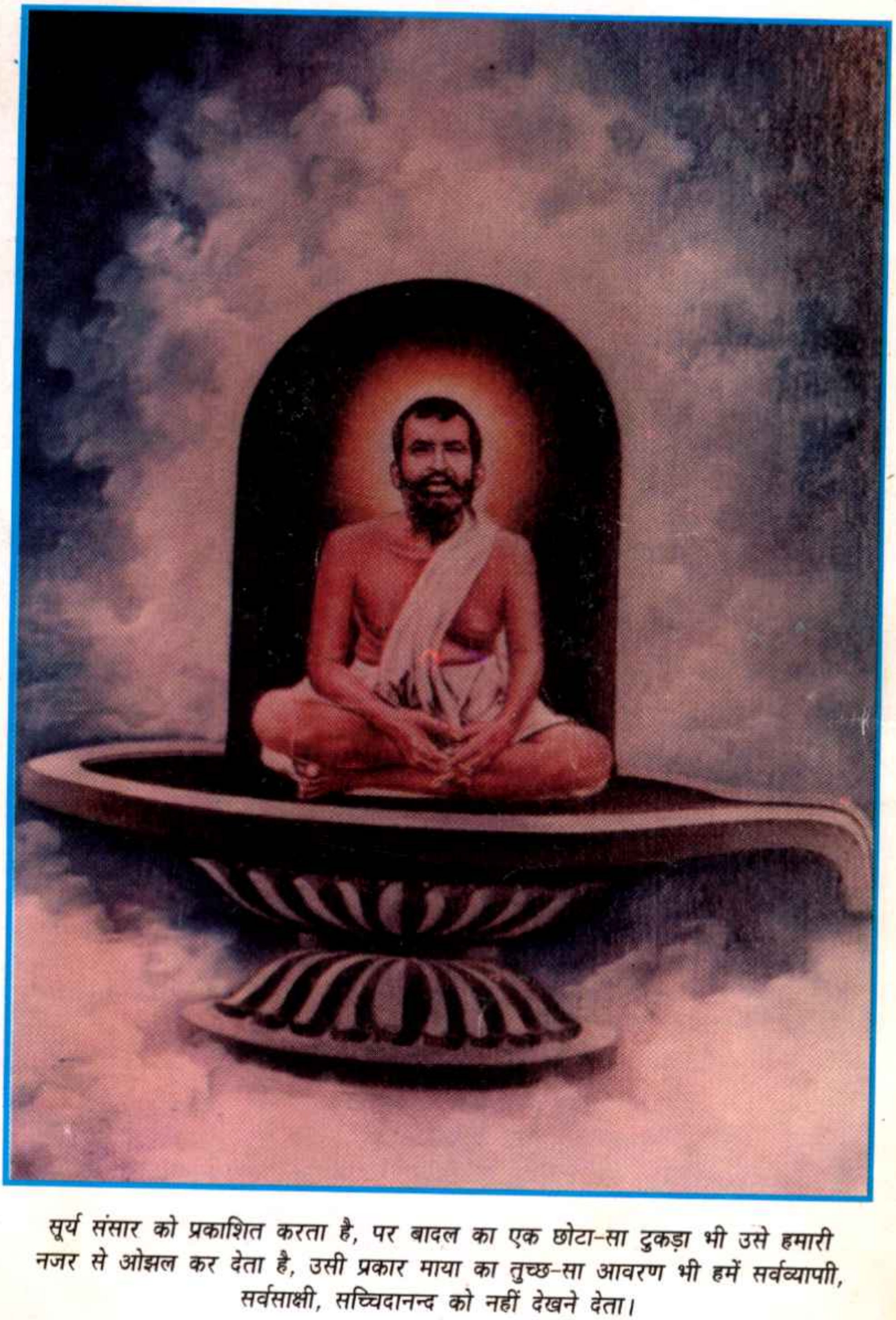

सूर्य संसार को प्रकाशित करता है, पर बादल का एक छोटा-सा टुकड़ा भी उसे हमारी नजर से ओझल कर देता है, उसी प्रकार माया का तुच्छ-सा आवरण भी हमें सर्वव्यापी, सर्वसाक्षी, सच्चिदानन्द को नहीं देखने देता।

★ श्री रामकृष्ण ★

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

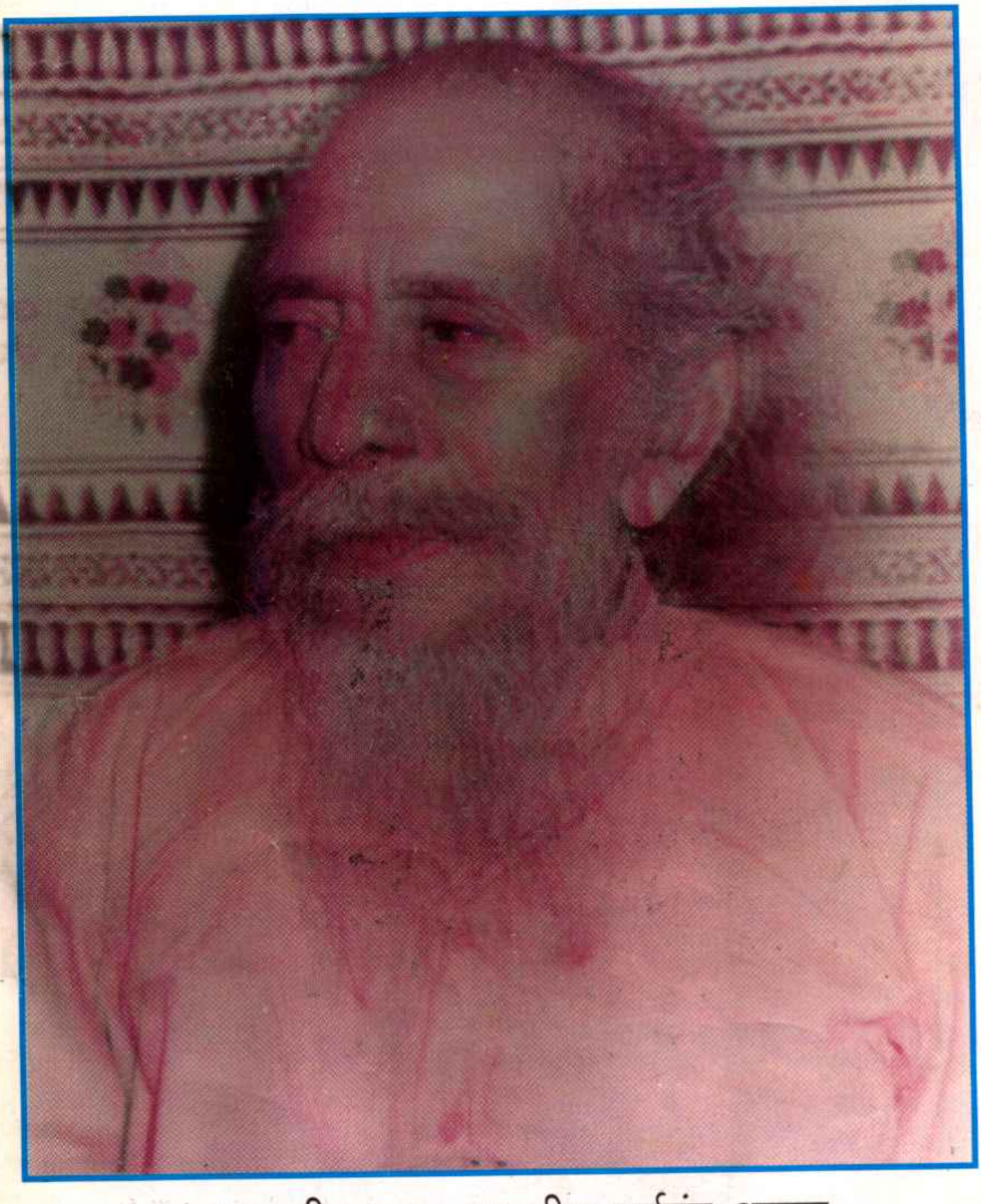

परम पूजनीय प्रातः स्मरणीय सर्वतंत्र अनन्त
श्री विभूषित **श्री अमृतवाग्भवाचार्य जी महाराज**
(1902–1982)

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

हमारे गुरूदेव -
श्री अमृतवाग्भवाचार्य जी

सच्चिदानंद ब्रह्म को वेदों में रसमय कहा है -- *रसो वै सः*। और सच तो यह है कि भगवान को तभी मज़ा आता है जब वे शरीर धारण करके अपने भक्तों के साथ नाना प्रकार के खेल खेलते हैं।

श्री अमृतवाग्भवाचार्य जी महाराज ऐसे ही भक्तों में अग्रगण्य हैं जिनका पूरा जीवन ही इस प्रकार की लीलाओं से भरा हुआ है। पूज्य गुरु महाराज को मात्र सोलह वर्ष की आयु में लगातार नित्य चालीस दिन तक 'शक्ति महिम्न स्तोत्र' का पाठ करने पर भगवान शंकर के अवतार दुर्वासा जी ने साक्षात् दर्शन दिए और उन्हें शांभवी योग की साधना के लिए दीक्षा दी, फिर तो गुरु महाराज के जीवन में इस प्रकार की अनेक घटनाएँ घटित होती ही रहीं। उनमें से प्रमुख हैं -

पूजनीय महाराज जी ने जब श्रीनगर (काश्मीर) की **भगवती शारिका देवी** के मंदिर में पंचस्तवी का पाठ अत्यंत मधुर स्वर में किया तो उनके इष्ट देव भगवान शंकर अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने अचकन पहनकर, एक काश्मीरी पंडित के रूप में दर्शन दिए तथा अपना नाम शिवजी पंडित बताया। लगभग एक सप्ताह तक भक्त और भगवान की यह लीला चलती रही और अंत में भगवान शंकर गुरुजी की कुंडलिनी जागृत करके अचानक ही अंतर्ध्यान हो गए। गुरुजी ने इस घटना को लगभग अस्सी श्लोकों में विस्तार के साथ लिखा है, जिसे दिल्ली की लाल बहादुर संस्कृत विद्यापीठ ने अपनी 'शोधप्रभा' में प्रकाशित किया है। इसी प्रकार काशी में सुनसान पड़े भगवती तारा देवी के मंदिर में जब गुरु महाराज नरबलि की घटना को स्मरण करके घबरा गए तो स्वयं भगवती एक बंग महिला के रूप में प्रकट हो गई और गुरु महाराज को गायत्री मंत्र के जप की महिमा समझा गई। भक्तों को कष्टों से बचाने के लिए गुरुजी ने 'प्रभो शंभो' जैसी प्रार्थना लिखी। इस श्लोक में गुरुजी को 'बद्धा दरकरं' शब्द उचित नहीं लगा, उसी समय भगवान शंकर एक महर्षि के रूप में वहां प्रकट हुए और उन्हें ऐसा करने से रोक दिया क्योंकि गुरुजी ने यह बिलकुल उपयुक्त शब्द लिखा था।

काशी के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महान् विद्वान् महामहोपाध्याय पद्मविभूषण श्री कविराज गोपीनाथ जी ने गुरुजी से आग्रह करके उनके जीवन की ऐसी कुछ घटनाओं को 'सिद्ध महारहस्यम्' में लिखवा लिया था जो अब हिंदी अनुवाद सहित प्रकाशित हो चुका है। अमरनाथ गुफा में गुरु महाराज को भगवान शंकर ने अर्धनारीश्वर के रूप में साक्षात् दर्शन दिए थे। पूज्य महाराज जी की इन लीलाओं का वर्णन करने लगें तो एक पूरी पुस्तक ही बन जाएगी। हम उन्हें अन्यत्र एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने का प्रयत्न भी कर रहे हैं। हम यहां गुरु महाराज के जीवन की एक महत्वपूर्ण अंतिम घटना का वर्णन कर इसे समाप्त कर रहे हैं। उस समय गुरु महाराज, साउथ मोतीबाग, दिल्ली में, रक्षा मंत्रलय में उच्च पद पर कार्यरत श्रीराम के परम भावुक भक्त तथा महान् तपस्वी श्री पंडित देशराज जी शर्मा के सरकारी आवास 'सी-22' में रहते थे। गुरु महाराज ने भगवती से प्रार्थना की "माँ! आपने मुझे अपने अनेक रूपों में साक्षात् प्रकट होकर दर्शन दिए हैं किन्तु आपने अभी तक हमें अपने वास्तविक स्वरूप का दर्शन नहीं दिया।" गुरु

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

महाराज उस समय अपने बिस्तर पर लेटे हुए थे तभी भगवती त्रिपुर सुंदरी दो वर्ष की बालिका बन कर उनकी गोद में आ बैठी। देवी के दोनों पैरों मे पाजेब थी। गुरुजी ने देखा कि एक पैर से पाजेब निकलकर गिर गई है। गुरु महाराज ने जैसे ही वह पाजेब मां के श्रीचरणों में पहनायी, वह तत्काल अंतर्ध्यान हो गई।

शरीर त्यागने से पूर्व श्री बी.डी. बक्षी जी ने जब उन्हें प्रणाम किया तो गुरुजी के मुख से निकला – ''जय शंकर''। गुरुजी इन शब्दों में से सबको आशीर्वाद देते थे, और उनके मुख से निकले ''जय शंकर'' ही उनके अन्तिम शब्द थे। गुरुजी की इच्छानुसार उनके मृत शरीर को हरिद्वार में नीलधारा में एक कुर्सी पर बिठाकर गंगा जी के जल में रख आये। गुरुजी की कुर्सी के चारों ओर लगभग बीस किलो के पत्थर बांध दिये थे ताकि उनका दिव्य शरीर बह कर इधर-उधर न चला जाए। और समाधि के रूप में वहीं रहें, किन्तु आश्चर्य! गंगा मैया तो जैसे अपने पुत्र की प्रतीक्षा ही कर रहीं थी, बीस मिनट के बाद जब हम गुरु महराज को अन्तिम प्रणाम करने लगें तो डा. रघुनाथ जी शर्मा के अनथक प्रयास करने पर न तो वहां गुरुजी का शरीर था और न कुर्सी, जबकि नवम्बर मास में गंगाजी का जल इतना पारदर्शी था कि सब कुछ नज़र आता था।

श्री अमृतवाग्भवाचार्य जी अपने छात्र जीवन में श्री वैद्यनाथ वरकले के नाम से प्रख्यात थे। इनके पिता श्री कृष्ण जी शास्त्री और माता श्रीमती राधा देवी थी। तीन मास की आयु में इन्हें जिस मातृ-स्नेह से वंचित होना पड़ा वह इन्हें विमाता रुक्मणि देवी से भी न मिला। पिता की आज्ञा से आपने शीलवती देवी से विवाह तो कर लिया किंतु शीघ्र ही सदा के लिए पत्नी का त्याग कर ईश्वर भक्ति में लग गए। हाँ, पत्नी के निरंतर अनुरोध पर मात्र एक बार, साधना का मार्ग समझाने के लिए वृंदावन में भेंट की थी और इस प्रकार उन्हें भी साधना मार्ग में उच्च स्थान तक पहुँचा दिया।

पूजनीय गुरु महाराज का व्यक्तित्त्व सर्वतोमुखी प्रतिभा संपन्न था उन्हें अपने पिछले चार जन्मों का ज्ञान था। व्याकरण, ज्योतिष्य और तंत्र-मंत्र का उन्हें अद्भुत ज्ञान था। वे सर्वतंत्र स्वतंत्र थे जिसका अर्थ है कि वेद, उपनिषद्, पुराण, षड्दर्शन आदि सभी विषयों का उन्हें ज्ञान था, किसी भी विषय की जिज्ञासा को शास्त्र सम्मत ढंग से हल कर देते थे। वे वर्ण व्यवस्था के कट्टर समर्थक थे और जाति को जन्म के आधार पर ही स्वीकार करते थे। इधर वे संस्कृत के आशुकवि थे और किसी भी विषय पर संस्कृत में तत्काल ही श्लोक रचना कर देते थे। उनकी संस्कृत रचनाएँ इसका ज्वलंत प्रमाण है। "आत्म विलास" उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना है। वे स्वतंत्रता संग्राम के अमर शहीदों के सान्निध्य में रहे थे और श्री चंद्रशेखर आज़ाद और श्री राजगुरू के साथ बिताए दिनों के संस्मरण सुनाते थे। छात्र जीवन में वे एक कुशल तैराक और क्रिकेट-कप्तान भी रहे। अध्ययन में उन्होंने अनेक स्वर्ण पदक जीते थे। वाराणासी में अनेक शोधकर्ताओं का आपने मार्ग निर्देशन दिया था। इसके अतिरिक्त वे एक महान योगी भी थे, उन्हें खेचरी के अतिरिक्त योग के अनेक दुर्लभ रहस्यों का ज्ञान था। वे प्रात: तीन बजे उठकर साधना करते थे।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

आभार

"प्रभो शंभो" का समस्त अंग्रेज़ी रूपांतर परम पूजनीय विद्वद्वर डा॰ रघुनाथ जी शर्मा (अध्यक्ष संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय) ने अत्यंत परिश्रम से किया है। मेरा यह सौभाग्य रहा कि छात्र-जीवन से मुझे आपका स्नेह और मार्ग निर्देशन मिला है। धर्म, साधना और विद्वत्ता के स्वरूप, वे इस संतप्त जगत के लिए तो एक महान् उपलब्धि हैं ही, मेरे लिए तो एक दिव्य उल्लास के स्रोत भी हैं क्योंकि सांसारिक लाभों को ठुकरा कर मात्र 'श्री हरि' को पाने के लिए जीवन समर्पित करने वाले भक्त तो शायद बहुत प्रयास के बाद मिल ही जाएँ पर भयंकर से भयंकर कष्ट आने पर भी अपनी भक्ति से विचलित न होने वाले भक्त अत्यंत दुर्लभ हैं। पूजनीय डा॰ साहब ऐसे भक्तों में अग्रगण्य हैं।

यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः ।
यस्मिन् स्थितो न दुखेन गुरूणापि विचाल्यते ॥ (गीता ६/२२)

इस पुस्तक के प्रकाशन में मेरी सहधर्मिणी और सहकर्मिणी श्रीमती ललिता त्रिवेदी ने मेरे जीवन के अन्य समस्त क्रिया कलापों की तरह यहाँ भी अर्धांगिनी का कर्त्तव्य तन, मन और धन से निभाया, उनके सहयोग के बिना मैं इस पुस्तक की कल्पना भी नहीं कर सकता। वे तो मेरी अपनी ही हैं अत: उनके लिए मैं क्या कहूँ !

मेरे ज्येष्ठ पुत्र श्री विजय त्रिवेदी ने पुस्तक की पांडुलिपी को कंप्यूटर से निकाला, प्रूफ देखे और चित्रों से सजाया अत: भगवान् शंकर से प्रार्थना है कि इन्हें अपनी अनपायिनी भक्ति देकर सर्वविध सौख्य प्रदान करें। इसी प्रकार श्री राजेंद्र जी और श्री जोगेन्द्र ने पुस्तक के प्रकाशन में सहयोग दिया, मैं इन सबका आभारी हूँ। श्री शिवमाहिम्न स्तोत्र का अंग्रेजी अनुवाद हमारे गुरु महाराज के भक्त श्री कृष्ण दास जी का है, मैं इसके लिए इनका भी आभारी हूँ।

आषाढ़ शुक्ला दशमी — **रवि शर्मा त्रिवेदी**
श्री अमृतवाग्भव जयन्ती
३०.०६.२००१

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

"प्रभो शंभो" : एक परिचय

इस परिवर्तनशील दु:खमय जगत् में सच्चा सुख ईश-प्रार्थना में ही है। गायत्री और महामृत्युञ्जय मन्त्र तथा श्रीरामरक्षा और श्री शिवमहिम्न-स्तोत्र को प्रकाश में लाकर नरदेहधारी महात्माओं ने युगों से संतप्त प्राणियों को शरण दी हैं। इन तपस्वी महात्माओं को भगवान् श्री रामकृष्ण परमहंसदेव उस विशाल पोत के समान बताते हैं, जो अपने साथ करोड़ों जीवों को भी संसार सागर से अनायास ही पार करा देते हैं। शिवस्वरूप इन महापुरुषों की ही कोटि में आते हैं हमारे पूज्य गुरुदेव अनन्त श्रीविभूषित श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य हैं।

श्री गुरु महाराज जी ने वि. सं. 1660 के वैशाख मास में भक्तों के कल्याणार्थ "प्रभो शंभो" जैसे सिद्ध मंत्र की रचना की। उसी दिन सांयकाल आप इस प्रार्थना के "बद्धादरकरम्" में संशोधन का विचार कर ही रहे थे कि दिव्य ऋषि देहधारी भगवान ने साक्षात् प्रकट होकर आपको इस संशोधन से रोका। तदनन्तर श्री गुरु महाराज जी ने जिस भी आर्तजन को यह प्रार्थना बताई उसके असाध्य कष्ट भी दूर हो गये।

मुझे बचपन में ही पूज्य पिताजी (श्री डा॰ भवानीशंकर जी त्रिवेदी) ने यह प्रार्थना कंठस्थ कराई। इसके विधान से अपरिचित मैं श्रद्धानुसार ही इस सिद्ध मंत्र का जप करता रहा। फलस्वरूप विविध विघ्नों से त्रस्त होकर भी यत्किंचित् विद्यार्जन कर सका। श्रीचरणों के आदेश से इस सिद्ध महामंत्र का उन्हीं के द्वारा प्रतिपादित जप-विधान निवेदित है। साधक भक्त को सोमवार अथवा किसी भी महाशिवरात्रि जैसे शुभदिन (जब चन्द्रमा जन्म राशि से अष्टम न हो।), शिवालय में आशुतोष भगवान् शिव का पूजन कर मन में यह सोचते हुए कि भगवान् ही "प्रभो शंभो" की दीक्षा दे रहे हैं, इस सिद्ध मंत्र का अर्थसहित तीन बार पाठ करना चाहिए। तत्पश्चात् नित्य प्रति रात्रि को निन्द्रामग्न होने से पूर्व और प्रात: निद्रा त्यागकर शय्या पर ही इस सिद्ध मन्त्र का तीन बार पाठ करने से कष्ट निवारण हो जाता है। अन्य अभीष्ट कार्यों के लिए श्रद्धानुसार जप अधिक से अधिक संख्या में करना चाहिए। उदाहरणार्थ नित्य दो माला जपने से परीक्षा में निश्चित सफलता मिलती है। किसी भी कठिन दर्शनिक विषय को समझने से पूर्व ग्यारह बार पाठ से विषय सुगम हो जाता है।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

BLESSINGS !

ŚRĪHARIḤ

Śiva is the ultimate resting-place for all the individuals. On physical plane, He assumes defenite forms, performs diverse sports and assumes different nomenclatures, like Rudra, Mahākāla, Mṛtyuñjaya, Mahāmṛ-tyuñjaya etc., for the benefit of His devotees. Those who seek a refuge in Him, for them He is the wish-fulfilling-tree, the Kalpa-vṛkṣa.

This Śiva, a bounteous God, has been eulogised by Sarva-tantrasvatantra, H.H. Anantaśrī Amṛtavāgbhavācārya Jī Mahārāja, a prolific writer of Śiva-śakti-tattva, is one of his intuitional utterances, popularly regarded as a Siddha Mantra, the "Prabho Śambho—" etc. The historic anecdote connected therewith is indicative of the same being surcharged with divine spell. Many have got their desired objects by repeating the same as per procedure, verbally communicated by Ācārya Jī Mahārāja himself.

The procedure of chanting this Mantra is very simple. The devotee should go to a Śiva temple on Monday or any auspicious day and worship Lord Śiva. Then he should mutter the Mantra thrice thinking that the Lord is very kindly initiating him in the same. Thereafter one should daily recite this Mantra thrice before going to bed at night and thrice before leaving the bed in the morning. For a sure success in any of the examinations one should do it at the rate of two Mālās (one Mālā consisting of 108 recitations) per day. Before starting any difficult text on Philosophy, one should repeat the Mantra eleven times. For other purposes the degree of devotion and recitations will accordingly help in positive.

I was initiated into the Mantra by my revered father in the year 1949, when I was a young child and a student of a primary standard. With confidence I can say that it works wonders.

The Mantra is definitely going to benefit many more in getting the Abhyudaya (pleasures of the mundane plane) and the Nihśreyasa (pleasures hereafter in the worlds beyond as also the resultant Mokṣa (a state of total liberation and the Supreme Bliss).

Dr. Raghu Nathji Sharma
(Head of Sanskrit Deptt., University of Delhi)

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

सिद्धमहामन्त्रप्राप्तीतिहासः

-- श्री अमृतवाग्भवाचार्य जी

मन्त्रिर्मितः प्रभोशम्भोश्लोको यत्सदयेच्छया ।
इष्टसिद्ध्यर्थं प्राप सिद्धमहामन्त्रस्वरूपताम् ॥ १ ॥

हितायाऽऽस्तिकलोकानां वर्णयामि समासतः ।
नत्वा तत्पादयुगलं तद्वृत्तं विस्मयावहम् ॥ २ ॥

सायन्तनं नित्युकृतयं समाप्य समवस्थिते ।
स्वासने मरूयन्धकारावृते पूजागृहेऽमले ॥ ३ ॥

श्रीशिवप्रार्थनापद्ये प्रातरेव स्वनिर्मिते ।
अपशब्दं चिन्तयति सहसा दिव्यदेहवान् ॥ ४ ॥

जीर्णाशुकं जानुदघ्नं वसानो लम्बमेकतः ।
रोमगुच्छाचितबिलमहाश्रोत्रः शशिप्रभः ॥ ५ ॥

बर्बरप्रभरोमालिव्याप्तसवङ्गिविग्रहः ।
तिरस्कृततडिच्चञ्चत्कनीनिकविलोचनः ॥ ६ ॥

महात्मा प्रकटीभूय कोऽपि मत्सम्मुखं तदा ।
उच्चालयन् तर्जनीं स्वां मामुवाच सगर्जनम् ॥ ७ ॥

पद्यमेतन्नास्त्यशुद्धं न कार्यं परिवर्तनम् ।
एवं समासे सुमते ! कामशुद्धिं विशङ्कसे ॥ ८ ॥

इत्युक्त्वा यो दयार्द्रेण चक्षुषा वीक्ष्य मां पुनः ।
शम्पेव क्वाप्यगात् सद्य आश्रित्याऽलक्षितां गतिम् ॥९॥

अजानन्नपि तस्याऽहं नामधामादिकं मुहुः ।
प्रणमामि सदा भक्तया रूपं वाक्यं च संस्मरन् ॥ १० ॥

नालागढे धर्मसभाभवने मासि माधवे ।
वृत्तं वृत्तं वैक्रमेऽब्दे ऋद्धिधैर्यमिते गते ॥ ११ ॥

--- आचार्य अमृतवाग्भवः

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

★ श्रीः ★

मन्त्र के इतिहास का भाषानुवाद

-- श्री अमृतवाग्भवाचार्य जी

मेरा बनाया 'प्रभो ! शम्भो !' श्लोक जिसकी दयामय इच्छा से स्वेष्ट-सिद्धि के लिए सिद्धमहामन्त्रस्वरूप हो गया, उसका आश्चर्यजनक वृत्तान्त उनके चरणों को प्रणाम करके आस्तिक लोगों के हित के लिये संक्षेप से यहाँ मैं वर्णित कर रहा हूँ ॥ १-२ ॥

सायंकाल का नित्य-कृत्य समाप्त कर अपने निर्मल पूजागृह में जहां अन्धकार भरा हुआ था मैं अपने आसन पर बैठा हुआ था। उसी दिन प्रातःकाल ही अपने बनाये श्री शिव की प्रार्थना-श्लोक ('प्रभो ! शम्भो!') में अशुद्धि को सोच रहा था, इतने में ही अकस्मात् एक दिव्य शरीरधारी घुटनों तक पुराना कपड़ा जिसका एक छोर नीचे लटक रहा था, पहने हुए, रोओं के गुच्छों से भरे हुये छिद्र वाले बड़े कान जिनके थे ऐसे पुरुष प्रकट हुए। उनका वर्ण पूर्ण चन्द्रमा की तरह चमकीला था। उनके सम्पूर्ण शरीर में घुंघराले बाल भरे थे और आँखों की पुतलियां बिजली की चमक से भी अधिक चमकीली थीं। ऐसे वे अज्ञात कोई महापुरुष मेरे सम्मुख प्रकट होकर अपनी तर्जनी उंगली को ऊंची उठाकर घुमाते हुए और बड़ी गर्जना के साथ मुझसे कहने लगे ॥ ३-७ ॥

यह श्लोक अशुद्ध नहीं है, उसमें कोई इधर-उधर परिवर्तन नहीं करना तुम तो बुद्धिमान् हो ऐसा समास करने पर "बद्धादरकरं" में कौनसी अशुद्धि की तुमको शंका हो रही है। इस तरह कहकर दयार्द्र - दृष्टि से एक बार मुझे फिर देखा और बिजली की तरह अदृश्य गति से वे कहीं चले गये, अदृश्य हो गये ॥ ८-९ ॥

उनका नाम और उनका स्थान कुछ भी मैं नहीं जानता, फिर भी बारम्बार श्रद्धा से उनके आदेश को और उनके स्वरूप को स्मरण करता हुआ उनको प्रणाम करता रहता हूँ। यह घटना संवत् १९९० वैशाख मास की है और मैं उस समय नालागढ़ (हिमाचल प्रदेश) धर्मसभा भवन में था॥ १०-११ ॥

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

How "Prabho Shambho" (Great Mantra) Appeared

One (Lord Śiva) whose kind (graceful) desire has imparted the nature of Siddha Mahāmantra, for attaining the desired fruits, to the verse 'Prabho Śambho' by me; (1)

Offering salutations of His lotus feet, I am writing the wonderful anecdote connected therewith in nutshell for the benefit of the Āstikas (the belivers). (2)

Having accomplished daily rites of the evening, I was sitting on my holy seat (āsana) in the sacred place of worship (pūjā-gṛha) enveloped in darkness. (3)

I was thinking about a possible mistake in "Prabho Shambho" "the Śiva-Prārthanā" composed by me the same morning. Suddenly (there appeared) a divine form. (4)

Wearing rags hanging on one side down upto His knees, possessed of long ears, the pits whereof were covered with the hair (grown thereon) and possessing the beauty of the (full blooming) moon. (5)

The whole of His physique was adorned with the excessively curly hair and the corners of his eyes were more shining as also moving than the lightning. (6)

A certain great sould (Mahātmā—possessed of the aforesaid qualities) appeared on the scene in front of me and holding His foregingure high, He thus spoke to me aloud. (7)

"O! Intelligent one! This verse is not incorrect and hence do not amend it. In a compound (Samāsa in Baddhādara-karma) thus what mistake do you visualise"? (8)

Having proclaimed thus, He, who, once again looked at me with affection, unnoticingly as also with the flash of the lightning disappeared at once. (9)

Even though I do not know His name and whereabouts, yet reminded of His personality and the speech (verdict) again and again, I offer my salutations (praṇāma) always to Him with devotion. (10)

This episode took place in the Madhva (Vaiśakha) month of the Vikrama era 1990, when I was residing in the Dharma-sabhābhavana of the Nālāgaḍha (Himachal Pradesh). (11)

—Ācārya Amṛtavāgbhava

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

श्री सिद्धमहामन्त्र

प्रभो ! शम्भो ! दीनं
विहितशरणं त्वच्चरणयोर्
भवारण्यादस्माद्विषम–
विषयाशीविषवृतात् ।
समुद्धृत्य श्रद्धा–
विधुरमपि बद्धादरकरं
दयादृष्ट्या पश्यन्निज–
तनयमात्मीकुरु शिव !

--श्री अमृतवाग्भवाचार्यजी

Prabho Śambho Dīnam Vihitaśaraṇam Tvaccarrṇayor-

Bhavāraṇyādasmād Viṣamaviṣay Āśiviṣavṛtāt.

Samuddhṛtya Śraddhāvidhuramapi Baddhādarakaram

Dayādṛśṭyā Paśyannijatanayam ātmīkuru Śiva.

—Amritvag Bhav Acharyaji

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

"Prabho Shambho"

English Version

O Lord Śiva! All my sense objects are like venemous serpents and this world is like a jungle (forest). Kindly take me out of this jungle.

O all merciful God! I take refuge at your Lotus feet most humbly.

O my Lord I lack faith and devotion yet am I not your own son?

O my Father! with folded hands I pray you to cast your gracious glance on me.

Please take me in your fold and accept my humble surrender for Self Realisation.

"प्रभो शंभो" मंत्र का हिन्दी अर्थ

हे शिव ! इस संसाररूपी जंगल में विषयवासनाओं के भयंकर साँप ही साँप भरे हुए हैं। उनसे बचने के लिए आपके चरणों में शरण लेने के लिए दीन भाव से आया हूँ।

हे सर्वशक्तिमान शंभो! आप मुझे इस जंगल से बाहर निकाल दीजिए। मुझमें श्रद्धा-विश्वास जैसा कुछ भी नहीं हैं। फिर भी हूँ तो आपका ही बेटा और फिर, दोनो हाथ जोड़े आपकी शरण में आया हूँ।

हे दीनानाथ! फिर देर क्यों कर रहे हो, अपनी करुणा भरी दृष्टि इस पुत्र पर भी डालो स्वामी ! बस इसे अपना ही बना लो नाथ !

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

अथ श्री शिवमहिम्न स्तोत्र

पुष्पदन्त उवाच --

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाऽप्येषः स्तोत्रे हर! निरपवादः परिकरः ॥ १ ॥

दुःखों को हरने वाले हे शिव!

मैं आपकी महिमा गाने चला हूं, लेकिन ब्रह्मा भी पूर्ण रूप से आपकी महिमा गाने में अपने को असमर्थ पाते है। ब्रह्मा सरस्वती के स्वामी है (जो विद्या की देवी है)। जब वे ही यहां हार मान गए तो मेरा यह प्रयास वैसा ही है, (जैसे एक बौना व्यक्ति पहाड़ उठाने का प्रयास करे, तो क्या मैं भी हंसी का पात्र बनूंगा?) लेकिन क्या यह सच नहीं कि आपकी महिमा गाने मे कौन पीछे रहा है?
हे नाथ ! मै जानता हूं कि मेरे जैसे व्यक्ति के लिए आपकी महिमा का गान सर्वथा असंभव है, फिर भी यह उतना ही सच है कि छोटे से छोटा प्राणी भी अपनी सामर्थ्य बुद्धि के अनुसार आपकी स्तुति करने में पीछे नही रहता तो हे नाथ! मैं ही पीछे क्यों रहूं? (हां, इतनी प्रार्थना अवश्य है कि आप इस प्रयास की कमियों पर ध्यान न देना, जैसे शिशु की तोतली वाणी सुनकर माता-पिता प्रसन्न होते हैं, वैसे ही आप भी प्रसन्न होइए।)

Pushpadanta prays —

O Śiva, Though I know that even Brahmā is unable to describe your glory, not to speak of other sages and seers, who are unable to comprehend, yet I am venturing to offer my sincere prayer through this Stotram, according to my frail understanding Pray forgive all imperfections!

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो -
रतद्व्यावृत्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधिगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥ २ ॥

हे शिव ! आपकी महिमा का गान वाणी और मन से नहीं किया जा सकता। प्रायः रचनाकार पहले मन में सोचता है और फिर उसे वाणी का स्वरूप देता है, लेकिन यहां तो मन और वाणी दोनों ही हिम्मत हार बैठे हैं, क्योंकि वेदवाणी जो साक्षात् ईश्वर की वाणी है, वहां भी शिव को कहीं रूद्र (रुलाने वाला) तो कहीं शिव (प्राणियों का कल्याण करने वाला) कहा गया है। अब किसे सच मानें? शिव रुलाते हैं या प्राणियों का कल्याण करते हैं? इस विरोधी वर्णन का हल वेद *नेति-नेति* कहकर आश्चर्य (चकित) भाव से करते हैं। हे भगवान्! मन और वाणी से आप परे हैं। आपकी हम किन गुणों और किन-किन विषयों से स्तुति करें? लेकिन आपके सगुण स्वरूप को देखकर ऐसा कौन व्यक्ति होगा जिसका मन आप में न लगे और उसकी परवश हुई-सी वाणी आपकी स्तुति करने न लगे?

Your glory is beyond words and mind, even the Vedas are unable to fully comprehend and thus describe it 'Neti, Neti' (not this, not this). Who can sing your praises and describe your qualities? Absolute can not be the object of perception. Nevertheless, I am attempting this panegyric, because your manifest form, which you assume to shower blessings, is entrancing to all the devotees.

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन्! किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन! बुद्धिर्व्यवसिता ॥ ३ ॥

हे ब्रह्मन् ! ब्रह्मा जी ने अपनी अमृत के समान मधुर वेदवाणी में आपकी स्तुति की देवताओं के गुरु बृहस्पति ने ज्ञानभरी वाणी से भी आपको रिझाया लेकिन आप पर इनका कुछ भी प्रभाव नहीं हुआ। फिर मेरे जैसा साधारण व्यक्ति उसी कार्य को करने का साहस कैसे करे जहां ब्रह्मा और बृहस्पति भी अपनी हार मान बैठें।

हे त्रिपुरासुर का नाश करने वाले भगवान शंकर ! मैं तो केवल इतना ही जानता हूं कि आपके गुणगान करके मैं अपनी वाणी ही पवित्र कर रहा हूं क्योंकि मेरी बुद्धि को आपकी स्तुति करना ही प्रिय लगता है।

O Almighty! Does the praise of Brhaspati and Brahma even surprise you? You are the author of nectar-filled Vedas. I have ventured to recite your glories to purify my speech thereby.

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद! रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥ ४ ॥

हे वर देने में कुशल शिव ! आप सर्वशक्तिमान है, अतः इस सृष्टि का आप ही ब्रह्मा बनकर सत्व गुण से निर्माण, विष्णु रूप से रजोगुण द्वारा पालन तथा रुद्र रूप में तमोगुण से इसका संहार करते हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद तीनों ही आपके ऐश्वर्य का गान करते थकते नहीं किंतु आप से ईर्ष्या द्वेष करने वाले कुछ भद्दे बुद्धिहीन अभागे मूर्ख अपनी प्रिय भाषा में कपोल कल्पित मंत्रों का सहारा लेकर आपकी निंदा करते ही नही अघाते तो उनकी उस बकवास से क्या आपकी महिमा में कुछ कमी आ जाती हैं, कदापि नहीं।

O Giver of boons! As Almighty you create, sustain, and dissolve the universe, according to three gunas, (Sattva, Rajas and Tamas) you appear as Brahmā, Vishnu and Rudra, in these three aspects, respectively, but these gunas are combined in you, which fact is not easily understood by less intelligent people.

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

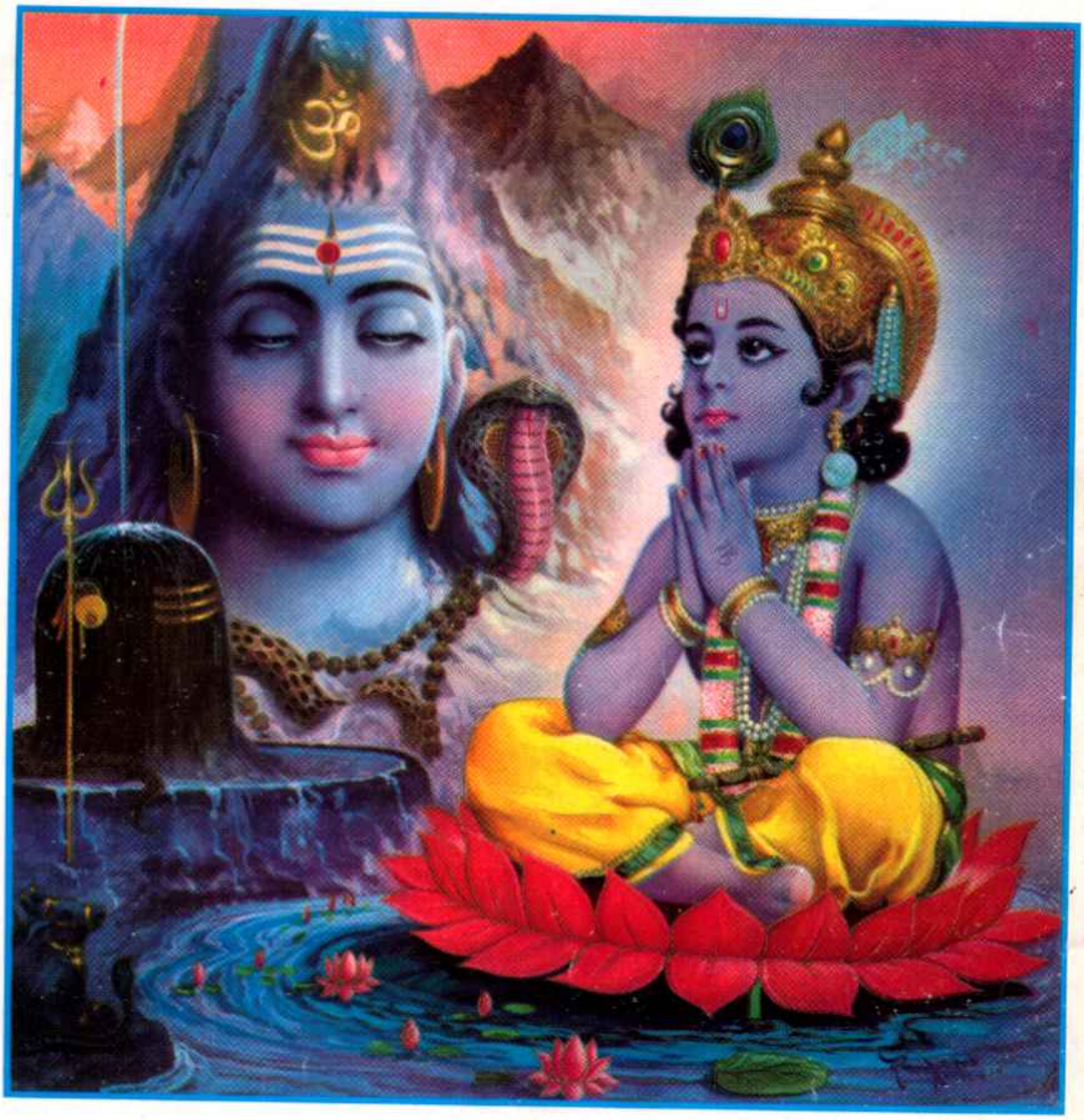

भगवान कृष्ण द्वारा शिव पूजन

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

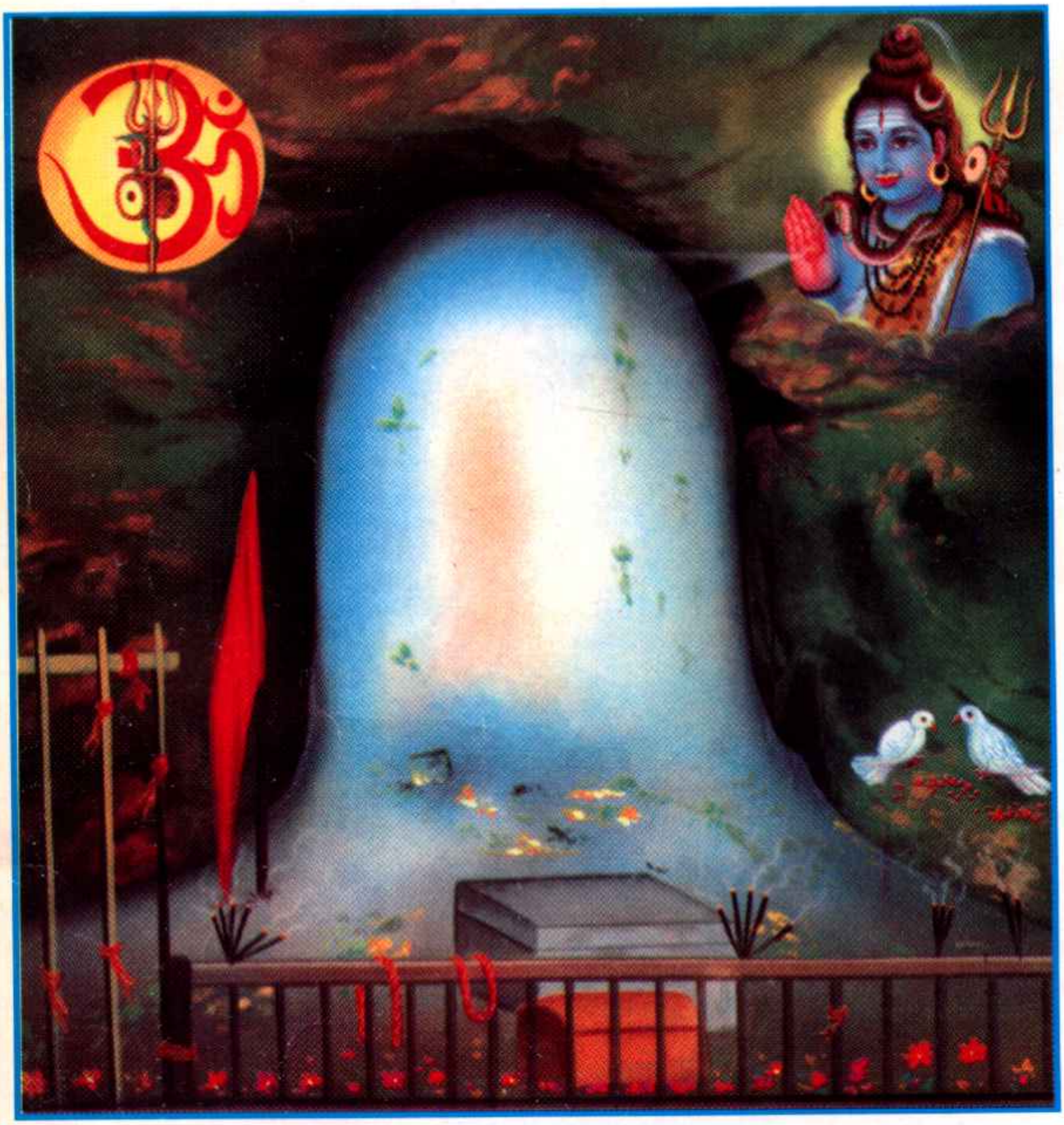

अमरनाथ गुफ़ा का दृष्य

VIEW OF AMARNATH CAVE

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

किमीहः किं कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥५॥

पुष्पदन्तजी कहते हैं कि ईश्वर के प्रति श्रद्धा समाप्त करने के लिए, कुछ इस प्रकार के तर्क नास्तिक लोग देते हैं। वे कहते हैं कि धरती, आकाश और पाताल किसने बनाए? यदि कहो, "भगवान ने" "तो कहां हैं उसका शरीर?" क्योंकि शरीर धारी ही निर्माण कर सकता है। और जब ईश्वर का शरीर ही नजर नहीं आता तो वह है ही नही? और फिर क्या कोई ऐसा शरीर धारी भी हो सकता हैं जो इतनी विशाल धरती और स्वर्ग का निर्माण कर सके? और निर्माता को मान भी लें तो इस धरती के निर्माण में किन साधनों का प्रयोग किया गया होगा? इस प्रकार के अनर्गल प्रलाप ईश्वर के अस्तित्व के विषय में प्रायः बुद्धिभ्रष्ट मूर्ख लोग ही करते हैं।

Why Almighty creates this universe and how and for what purpose? Such questions are raised by some ignorant people to create doubts, ignoring the fact that your divine nature is beyond the reach of intellect.

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपिजगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥ ६ ॥

हे देवों में महादेव ! आपके विषय में मूर्ख अनेक प्रकार की शंकाएं करते हैं कि क्या कोई शरीरधारी भी जन्म-मृत्यु के चक्कर से बचा है ? क्या रचनाकार के बिना भी सृष्टि संभव है ? शक्ति न होने पर भी क्या कोई विभिन्न लोकों का निर्माण कर सकता है? पुष्पदंत कहते हैं कि मूर्ख हमारी इन बातों को क्यों मानेंगे! हां, विद्वान लोग आपकी महिमा के विषय में ऐसी शंकाएं नहीं करते।

O superior among gods! People are stupified and idly question: Can a living being with physical body be free from the cycle of birth and death? Can creation be possible without a creator? Can any one create the planets and stars without possessing such power? But wise men firmly believe in your potency to create and manifest.

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥ ७ ॥

हे ईश ! जिस प्रकार नदियां समुद्र में जा मिलती हैं, उसी प्रकार विभिन्न संप्रदायों के व्यक्ति अपनी-अपनी साधना से आप में ही लीन हो जाते हैं। वे वैदिक मार्ग के साधक हों या वैष्णव हों अथवा कपिल मुनि के सांख्य या पतंजलि के योग मार्ग के अनुसार साधना करने वाले हों या शैव धर्म के अंतर्गत पाशुपत के सिद्धांतों पर चलकर आपको पाने का प्रयास करने वाले। सभी प्रकार के साधक अपनी - अपनी रुचि के अनुसार आपको पाने के लिए सरल या कष्ट भरी साधना का सहारा लेते हैं तथा सोचते हैं कि मात्र उनकी साधना का मार्ग ही सर्वश्रेष्ठ हैं। किन्तु सच तो यह हैं भगवान को पाने के अनेक मार्ग हैं और वे सभी अन्त में ईश्वर से मिला ही देते हैं।

Vedic philosophy, Sānkhya, (propounded by Kapila), Yoga (propounded by Patanjali) Saivism (Pāsupata doctrine) Vaiṣnavism, are various paths laid down for the people to choose according to their temperament. Howsoever diverse the paths may be, you are the Supreme goal for each.

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति च भवद्भ्रूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥ ८ ॥

हे वर देने में कुशल भगवान शंकर !
आपके जरा से संकेत (या भौंह चलाने) से ही कभी देवताओं को अनेक प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि मिल जाती है जिनसे वे नाना प्रकार के सुख भोगते हैं किन्तु जो व्यक्ति अपनी आत्मा के आनंद मे ही मग्न है उसे संसार की सुख-सुविधाओं से क्या लेना-देना ?
अब देखिए न, आपके पास घर की संपत्ति के नाम पर मात्र एक बूढ़ा बैल, एक खट्वाङ्ग (लकड़ी के इस डंडे पर तीन इंच चौड़ी पट्टी लगी रहती है, जिस पर अपनी बांहे टेककर या बगल में दबाकर योगीजन ध्यान में लीन रहते हैं) एक त्रिशूल, एक डमरू, एक मृगछाला, भस्म, सांप और कपाल के अतिरिक्त और है ही क्या? लेकिन इतना होने पर भी जो आत्मा का आनन्द आप लेते हैं वह अन्य सभी के लिए दुर्लभ है।
Your own possessions are simple and crude like Nandi, snake, ashes, wooden piece, deer skin, Parasu (axe) etc. but by your mere glance you can bless even the gods with great treasures and means of enjoyment. O Lord, sense objects do not delude you, who are absorbed in ecstasy of your own Self.

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन! तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ।।९।।

प्रायः व्यक्ति अपने शरीर को ही अपना सब कुछ मान लेता है किंतु आप तो हे शंकर! शरीर रूपी नगर को भुलाकर सदा ही आत्मा के ध्यान में लीन रहते हैं।

आपके अनेक प्रकार के भक्त हैं, कुछ तो सांख्य के अनुसार सारे संसार को सच्चा मानकर चलते हैं तो दूसरे (नास्तिक) इस सब संसार को नाशवान कहकर ठुकराते हैं। इन दोनों के अतिरिक्त एक तीसरे न्याय-शास्त्र के अनुसार चलने वाले हैं जो इस संपूर्ण जगत में दो प्रकार के पदार्थ मानते हैं--नाशवान और नाशरहित। इन मतवादों के विषय में कुछ भी कहना मेरे लिए तो यह सब धृष्टता-भरी वाचालता (बकवास) ही है, अतः मुझे तो आपकी महिमा देखकर आश्चर्य मग्न भाव से आपकी स्तुति करने में कोई लाज नहीं आती।

O Three-eyed One! Some say the universe is eternal, some claim it is not so, yet some others maintain all is transitory I am not perturbed by their different versions and eulogise your glory with full faith.

तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरञ्चिर्हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ।।१०।।

एक समय भगवान शंकर तेजोमय पर्वत के रूप में ब्रह्मा और विष्णु के सामने प्रगट हो गए। आपके इस अग्नि से जलते हुए ऐश्वर्य को देखकर दोनों ही चकित रह गए और उस पर्वत की सीमा ढूंढ़ने के लिए ब्रह्मा ऊपर तथा विष्णु नीचे की ओर गए किंतु दोनो ही असफल रहे।

हे गिरीश (अरुणाचल के स्वामी) ! जब ब्रह्मा और विष्णु हारकर अत्यंत श्रद्धाभक्ति से आपकी स्तुति करने लगे तो आप प्रसन्न होकर उनके सामने प्रत्यक्ष रूप से प्रगट हो गए। (आज भी यह अरुणाचल पर्वत तमिलनाडु की राजधानी चेन्नै से १५० कि.मी. की दूरी पर स्थित है।) सच तो यह है कि जो व्यक्ति अभिमान त्याग कर नम्रता से तथा श्रद्धा-भक्ति से सेवा करता हुआ आपकी शरण में आता है, आप उसकी सभी कामनाएं पूर्ण कर देते हैं।

Hail Girīsa! Your worship with humility and faith grants all boons. You are far away from those who approach you with pride and self conceit. You revealed yourself to Brahmā and Viṣṇu, when both prayed to you, having failed to recognised you in the pillar of Light! (Arunachal in South India).

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद् बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिर:पद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबले:
स्थिरायास्त्वद्भक्तेत्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥११॥

हे त्रिपुर राक्षस का वध करने वाले भगवान शंकर ! (संसार के सभी लोग शारीरिक, मानसिक या भौतिक दु:खों से पीड़ित हैं, शिवजी इन तीनों प्रकार के दु:खों का नाश कर देते हैं।) रावण ने आपके चरणों में कमलों के स्थान पर अपने नौ सिर ही चढ़ा दिए, उसकी भक्ति के आवेश पर प्रसन्न होकर! आपने उसे इतनी शक्ति प्रदान की कि उसे अपना कोई शत्रु ही नहीं मिलता था और उसकी बीसों भुजाएं किसी से भी युद्ध करने के लिए मचलती रहती थी। इसी रावण ने आपकी कृपा से प्रयास किए बिना ही तीनों लोकों का निष्कंटक राज्य पा लिया था।

इसी रावण की कृतघ्नता का वर्णन आगामी श्लोक में हैं --

O three-eyed Lord! King Rāvaṇa offered his nine heads in worship, but when he was about to cut off his tenth head you appeared and being pleased made him invincible, unparalleled, without an opponent. His twenty arms were filled with such prowess that he was always ready to fight.

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयत: ।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खल: ॥१२॥

श्री पुष्पदंत कहते हैं कि जब दुष्ट को समृद्धि मिल जाती है तो वह अपने उपकार करने वाले को ही भूल जाता है। रावण की बीस भुजाएं एक जंगल जैसी थी। इन भुजाओं से शक्तिशाली रावण इतना घमंडी हो गया था कि एक बार कैलास पर्वत में आपको बैठा देखकर भी अपने भुजबल को परखने के लिए उसने कैलास पर्वत को ही उठा दिया। तब तो भगवान शंकर से न रहा गया उन्होंने अपने अंगूठे के ऊपरी भाग को जरा-सा हिलाया, तो वह रावण कैलास के नीचे इतना दबता चला गया कि उसे पाताल में भी स्थान नहीं मिला। अन्त में आपने ही दया करके उसका उद्धार किया।

When King Rāvaṇa extended the valour of his arms, he forgot that all his strength was gained through your Grace and he tried to shake mount Kailāsa. But the mere tip of your toe threw him trembling down and he could not find a resting place in the nether world. So the ignorant become arrogant in affluence!

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

विषपान

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

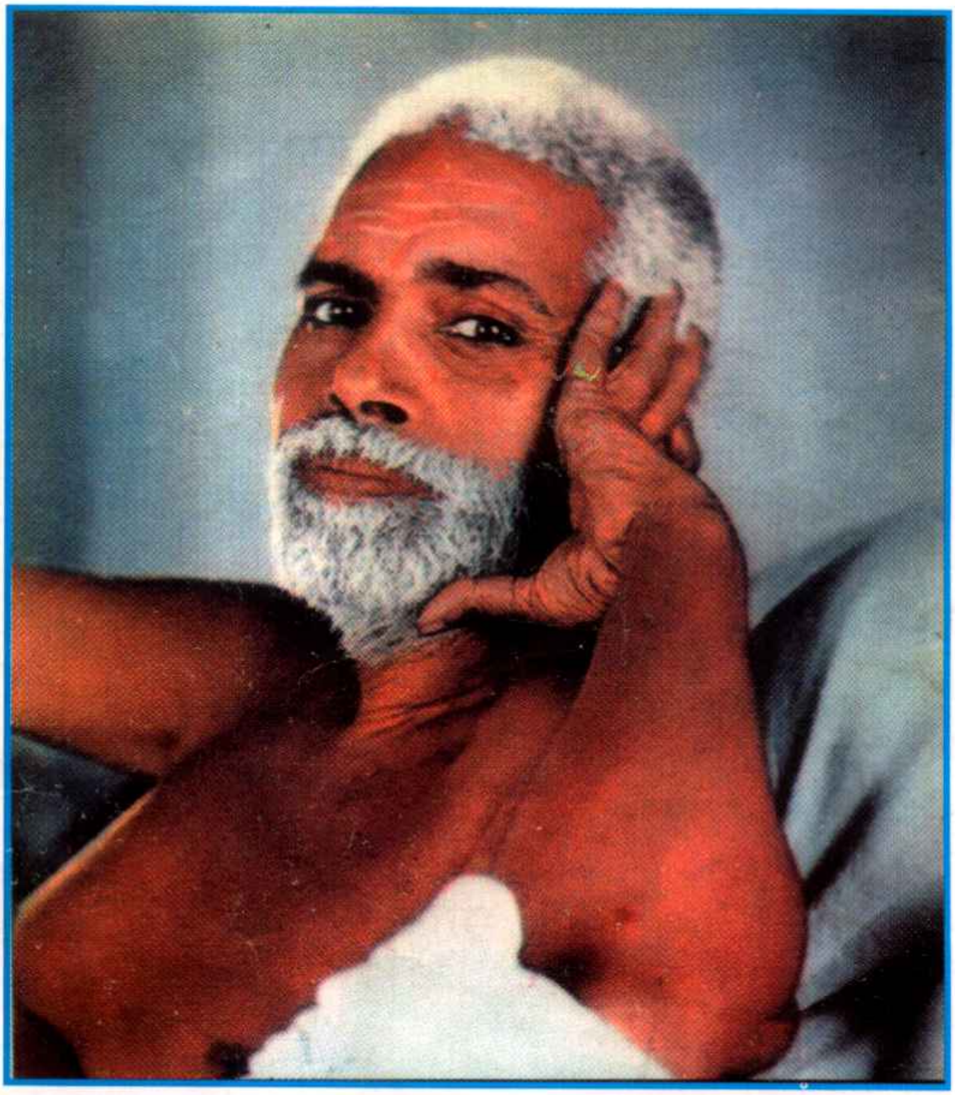

भगवान् श्री रमण महर्षि

(१८७९-१९५०)

व्यक्ति शारीरिक और मानसिक कष्ट झेलता है क्योंकि वह अपने को शरीर और मन ही समझ बैठा है। इन कष्टों से बचने का एकमात्र उपाय यही है कि वह अपना वास्तविक स्वरूप समझने का प्रयास करें तथा यह अनुभव में लावे कि वह मन और देह नहीं है अपितु शुद्ध आत्मा है।

अथवा

क्या आपने कभी ट्रेन में यात्रा करते समय किसी को अपना सामान अपने सिर पर लादे देखा है? आप भी अपनी समस्त चिंताएँ भगवान् के श्री चरणों में पूर्णतया सौंप दें, वे चाहे सुख दें या दुख, आप पूर्ण रूप से समर्पित होकर प्रभुचितंन करें, यहाँ शिकवा शिकायत के लिए कोई अवसर है ही नहीं। ध्यान रहे कि प्रयास के बिना आज तक किसी को भी सफलता नहीं मिली, अतः प्रयास तो करना ही होगा।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

यद्वृद्धिं सुत्राम्णो वरद! परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः ।
न तच्चित्रं सम्यग्वरिवसितरि त्वच्चरणयोर् -
न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥१३॥

हे वर देने वाले शंकर ! भक्तराज प्रह्लाद के पौत्र बाणासुर ने तीनो लोकों को जीत लिया था तथा उसने देवराज इन्द्र के ऐश्वर्य से भी महान सर्वोत्कृष्ट ऐश्वर्य पा लिया था तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है?

भगवान! सच तो यह है कि जो भी भक्त श्रद्धा से आपके चरणों में झुकता है उसके पीछे पीछे समस्त ऐश्वर्य चला आता है।

O Śiva! the Asura king, Bāṇa (son of Bali, grandson of Prahlāda) who was your devotee, could humble the prestige and pride of Lord Indra; It is not surprising at all, because bowing to your holy feet can bestow all kinds of prosperity.

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा -
विधेयस्यासीद् यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः ।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभय-भंग-व्यसनिनः ॥१४॥

समुद्र-मंथन से निकले रत्न तो देवताओं ने बांट लिए। लक्ष्मी को विष्णु ने अपनी पत्नी बना लिया, किंतु कालकूट विष से सभी घबराकर आपकी शरण में गए। हे शरणागत वत्सल ! सूर्य, चन्द्र और अग्नि रूप में तीन नेत्र वाले शिव ! आपने उस विष को पीकर अपने कंठ में ही रोक लिया, तब से आपके गले का रंग नीला हो गया और आप नीलकंठ कहलाने लगे। आपके कंठ में यह विष की यह कालिमा भी क्या आपके कंठ के सौंदर्य को नहीं बढ़ा रही ? आश्चर्य है कि यह भी आपके कंठ के सौंदर्य को अलंकृत ही कर रही है।

O Three-eyed one! You removed the apprehensions of untimely deluge *(pralaya)* at the time of churning of the ocean (samudra-manthana) when you swallowed the deadly poison *(kalakuta)*, and hold it in your throat, it caused a blue strain thereon. But, your blue throat enhances your grandeur and charm! Ah! you have turned a dreadful poision into an adornment!

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥१५॥

जिन व्यक्तियों ने अपनी इंद्रियों को वश में कर रखा है, ऐसे जितेन्द्रिय महापुरुषों का जो भी अपमान करने का साहस करता है, उसका कभी कल्याण नहीं होता, जैसे कि --
हे संसार पर शासन करने वाले ईश ! कामदेव के बाण, राक्षस और मनुष्य को अपना निशाना बनाने में अचूक सिद्ध हुए, इसी कामदेव ने आपको भी अन्य देवताओं के समान समझकर जब आप पर ही बाण चला दिया उसे आपके तृतीय नेत्र से निकली आग ने जलाकर भस्म कर दिया। सच यह हैं कि जितेन्द्रिय व्यक्ति का अपमान करने से आज तक किसी का कल्याण नहीं हुआ।

Kāmadeva's (cupid) arrows of lust, which have affect aqually on all ment, gods and demons, failed to affect you and he was reduced to ashes when he tried his shafts on you! Showing of disrespect to the self-controlled will always be harmful!

मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥ १६ ॥

हे भगवान् ! कभी-कभी महान् लोगों की विशालता भी अन्य लोगों को परेशान कर देती हैं, जैसे कि आप तो इस विचार से तांडव नृत्य करते हैं कि जगत की रक्षा हो, किंतु नृत्य करते समय जब आपकी विशाल बलशाली भुजाएं जोर-शोर से हिलती हैं और परीघाकार थपेड़े देती हैं तो मुक्त जटाओं के आघात से जब स्वर्ग भी नष्ट होनें की आशंका से घबड़ा जाता हैं तो लगता हैं कि अब प्रलय होने वाली है। नृत्य करते समय आपके पैर से ताल देते समय यह पृथ्वी कांप उठती है कि अब मैं नष्ट हो जाऊंगी या बचूंगी। भगवान विष्णु के चरणों में स्थित सभी लोक तथा आकाश भी नष्ट होनें की आशंका से कांप उठतें हैं।

O Almighty! When you were absorbed in Tandava dance to save the world, the earth trembled beneath your feet. By movement of your mighty arms and legs, loose locks of hair, stars, planets in space were in trepidation. Even super-abundance of power causes alarm!

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि -
त्यन अनेन एव उन्नेयम् धृतमहिम! दिव्यं तव वपुः॥१७॥

हे शिव ! आपकी महिमा की एक झलक यह भी है कि स्वर्ग से जब गंगा धरती पर आई तो सबसे पहले वह आपकी जटाओं में समाई। उस समय गंगाजल का वह उद्दाम प्रवाह इतने सारे झागों से भर गया मानो शिव का जटाजूट एक विस्तृत आकाश था, जिसमें गंगा का झाग असंख्य तारे बनकर झगमगा रहा है। जटाओं में समाई गंगा जटाओं से निकलकर धरती पर आई, यही गंगा हरिद्वार के पास सात भागों में विभक्त होनेपर लगता हैं कि पृथ्वी के सप्त द्वीपों को सप्त समुद्रों ने घेर रखा हैं, तथा स्वर्ग धरती और पाताल तक फैली हुई द्वीपों से घिरी एक वलय (कड़े) के रूप में प्रतीत होती हैं।

The white shining foam on the banks of celestial river, Mandākinī, which enhances the beauty of the milky way in space, when decended in, torrent on your locks of matted hair, as Gānga, seems no more than a drop of water on your head. This is a tiny glimpse of your Visvarupa (universal torm)!

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्राकौं रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि -
र्विधेयैःक्रीडन्त्यो न खलु परन्त्राःप्रभुधियः ॥ १८ ॥

हे शिव ! त्रिपुरासुर का वध करते समय आपने धरती को रथ, चांद-सूरज को रथ के पहिए, ब्रह्मा को सारथि, सुमेरु पर्वत को धनुष तथा भगवान विष्णु को बाण बनाया था। लेकिन हे प्रभो ! आपको यह सब खेल खेलने की क्या आवश्यकता थी, क्योंकि वह त्रिपुरासुर तो आपके सामने एक तिनके समान था। आप इच्छा मात्र से ही उसका वध कर सकते थे।

सच तो यह है कि जब आप लीला करते हैं तो फिर यह नहीं कहा जा सकता कि आपने ऐसा क्यों किया, वैसा क्यों नहीं किया, क्योंकि आपके संकल्प (इच्छाएं) किसी भी प्रकार से परतंत्र नहीं।

You could have destroyed the three cities (the three cities of the three sons of a demon) like a straw by your mere glance, but you made a show by engaging earth as chariot, Brahmā as charioteer, the great mountain Meru as bow, sun and moon as wheels of the chariot and the weilder as Discus (Viṣṇu) as an arrow. It is wrong to assume that you need any paraphernalia to accomplish any task. You engaged them just in a playful spirit, and to give them some credit a gesture of courtesy.

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयोर् -
यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥ १९ ॥

हे त्रिपुरासुर का नाश करने वाले ! एक बार भगवान विष्णु ने आपके प्रति भक्ति के आवेश में आकर आपके चरणों में एक सहस्र कमल चढ़ाने का संकल्प किया, तो उन कमलों में एक कमल कम था। उसकी पूर्ति के लिए जब भगवान विष्णु जी ने अपना नेत्र ही उखाड़ कर आपको चढ़ा दिया (क्योंकि उनके नेत्र कमल के समान सुन्दर हैं)।

भगवान विष्णु की अपने प्रति इतनी प्रगाढ़ भक्ति देखकर भगवान शंकर प्रसन्न हो गये और उन्हें सुदर्शन चक्र भेंट में दिया जो आज भी त्रिभुवन की रक्षा में सदा जागरूक है। पूजा-पाठ-जप आदि इसी विश्वास के साथ लोग करते हैं कि आप इन सबका फल अवश्य ही देंगे। क्योंकि कर्म का फल देने वालें तो चेतन हैं - परमात्मा शिव हैं। अतः पूजा पाठ आदि का फल अवश्य ही मिलेगा।

श्री रमण महर्षि कर्म को जड़ मानते हैं क्योंकि कर्म पूरा होने पर अपना अस्तित्व खो बैठता हैं। अतः नष्ट हो जाने पर कर्म का फल नहीं मिल सकता जैसे सामग्री नष्ट हो जानें पर घड़ा बन नहीं सकता। शत्रु को मारने में पाप नहीं, अतः कर्म का फल भावना पर आधारित है।

O Killer of Tripura! When one lotus flower was missing from the offering of a thousand lotuses, Lord Visnu placed one of his lotus-like eyes to complete the offering. Being pleased with such devotion you gifted him with the flying discuss *(sudarshan-cakara)* with which he protects the three worlds.

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढ़परिकरःकर्मसु जनः ॥२०॥

आदि और अन्त तो प्रत्येक कार्य से जुड़े हैं लेकिन किसी कार्य का समाप्ति से पहले ही उसका अन्त कर दें तो उसकार्य की उपलब्धि क्या होगी? कुछ नहीं। क्या यज्ञ के नष्ट होने पर उस यज्ञ करने का फल मिलेगा?श्री पुष्पदन्त का विश्वास है कि अवश्य मिलेगा। भगवान शंकर ही तो यज्ञकर्ता को यज्ञ करने का पुरस्कार अवश्य देते हैं क्योंकि भोलेनाथ भक्तों के श्रद्धापूर्ण अनुष्ठान के प्रति अत्यन्त सजग है और वे ही किसी भी कार्य ओर उसके परिणाम को जानते हैं। इस दृढ़ विश्वास से भक्तगण सभी वैदिक अनुष्ठानों (कार्यों) को पूर्ण श्रद्धा से करते हैं।

While performing sacrifices people offer you their respectful worship with confidence. Their faith increases on knowing that your blessings will surely bring about the desired results, because you are always vigilant about your devotees' endeavours and they are aware that sacrifice will yield results *without devotion to you!*

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृताम्
ऋषीणामार्त्विज्यं शरणद! सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रेषस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥२१॥

हे आश्रय हीन को शरण देने वाले शिव ! यज्ञ आदि क्रियाओं के करने में अत्यन्त कुशल तथा सब प्राणियों के स्वामी दक्ष प्रजापति ने स्वयं यजमान बनकर यज्ञ आरंभ किया, तो उस यज्ञ में अनेक महर्षि पुरोहित बने और देवगण इसे देखने आए किंतु ऐसे महान यज्ञ का भी आपने नाश कर डाला क्योंकि यह यज्ञ भगवान शंकर के प्रति श्रद्धा से नहीं अपितु द्वेष से किया गया (श्रद्धा रहित के कार्य का आप अवश्य ही नाश कर डालते है।) आप ही यज्ञ का फल निश्चित करते हैं।

O Giver of refuge! The yāga performed by Daksa Prajāpati (father of Pārvatī, and expert in sacrifical rites) with Ṛsis as priests and other gods as supervisors. But it was destroyed by you, because it was devoid of devotion to you. Surely the sacrifice is futile for the doers in the absence of sincere devotion to you.

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं ते अद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥२२॥

हे नाथ ! धर्म की रक्षा के लिए आप ब्रह्मा को भी दंड देने से नहीं चूके। एक बार ब्रह्मा अपनी ही पुत्री संध्या के रूप पर आसक्त हो गए वह मृगी बनकर भागी तो ब्रह्मा मृग का रूप धारण कर आकाश में उसका पीछा करने लगे। संध्या की रक्षा के लिए आप शिकारी बन गये और धनुष से अपना तीर निशाने पर छोड़ दिया। प्रतीत होता है कि आज भी आपका वही तीर आर्द्रा नक्षत्र बनकर आकाश में ब्रह्मा जी के मृगशिरा नक्षत्र का पीछा कर रहा है। (आकाश में मृग शिरा नक्षत्र के पीछे आर्द्रा नक्षत्र आता हैं। मृग शिरा के स्वामी ब्रह्मा हैं तो आर्द्रा के भगवान शंकर।)

पाप का नाश निम्न उपायों से संभव है -

क - भगवान के नाम का जप करने से।

ख - तत्व ज्ञान होने से "गीता 4-37"।

ग - पाप का फल भोगने से।

घ - किसी महात्मा के समक्ष प्रायश्चित की भावना से बोलकर अपने पाप का वर्णन करने से।

च - शास्त्रविधि से चान्द्रायण आदि व्रत से करने से।

छ - अधिक से अधिक शारीरिक कष्ट सहने से।

Lord Brahmā was charmed by his own creation in the form of his daughter (Śatarūpā). When he did not leave his ulterior motive even after she disguised herself as she-deer, you protected her honour by assuming the form of a hunter (Pinakapāṇī). In constellation *Mrigasira Nakṣatra* is being followed by Ārda *Nakṣtra* even today!

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

स्वलावण्याशंसाधृतधृनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्धघटना –
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥ २३ ॥

"मैं आत्मा नहीं शरीर हूं," इस भावना का नाश करने वाला शंकर जी!
अर्धनारीश्वर के रूप में आपने अपने आधे शरीर में पार्वती को उनके घोर तप के कारण ही आधा स्थान दे रखा है। इस रूप में यदि पार्वती आपको 'स्त्रैण' अर्थात् 'जोरू का गुलाम' मान बैठी है तो इसमें उनका कोई दोष नहीं क्योंकि स्त्रियां तो स्वभव से ही भोली-भाली होती है।
लेकिन सच तो यह है कि सौंदर्य की साक्षात् प्रतिमा पार्वती ने कामदेव को अपने तिनके के समान सामने ही जलते हुए देखा। जबकि कामदेव ने इस विश्वास से शिव पर तीर चलाया था कि पार्वती के सौंदर्य रूपी तीरसे वह शिव पर विजय प्राप्त कर लेगा। अत: शिव को नारी के सामने झुकने वाला मानना ठीक नहीं।

O Destroyer of Tripura! Out of pity for stern austerities, you offered half of your body to your spouse (Pārvatī) but, none should ever suffer from the wrong impression that you are infatuated by her, (Parvati's) beauty, since you destroyed the Lord of lust (cupid) in her very presence.

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा –
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥ २४ ॥

हे कामदेव के नाशकर्ता !
आपके कार्य बहुत ही विचित्र हैं, श्मशान में क्रीड़ा करते हैं, भूत-प्रेत आपके सहचर हैं आप अपने शरीर पर चिता की भस्म लेकर लेप करते हैं। गले में मुण्डमाल धारण करते हैं। इस प्रकार आपकी संपत्ति तथा आपका संपूर्ण आचरण ही अमांगलिक भले ही प्रतीत होता हो किंतु यह भी उतना ही सच है कि हे वरदान देने वाले शिव ! जो भी आपका स्मरण करता है, उसका आप परम मंगल करते हैं अर्थात् मोक्ष प्रदान करते हैं।

O Destroyer of cupid! O, Giver of boons!
Your playground is the cremation ground and your companions are ghosts, you besmear your body with ashes of the burnt bodies, and wear a garland of skulls around your neck. Through, all things about you appear ugly and hideous, yet you are the most auspicious and beneficient Lord!

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्ज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल भवान्॥२५॥

गर्मी से परेशान व्यक्ति अमृत के तालाब में प्रवेश करे तो उसे ऐसा सुख मिलता हैं कि उसे शब्दों में नहीं बताया जा सकता है, कुछ वैसा ही सुख उस साधक को भी आप प्रदान करते हैं जो यम, नियम का पालन करते हुए मन को बाहरी विषयों से हटाकर अपने चित्त (हृदय) में प्राणों का अवरोध करने से रोमांचित होकर अश्रुपूर्ण नेत्रों से एक दिव्य अनिवर्चनीय आनंद का अनुभव करता है। हे शिव! आप ही उस सुख के प्रदाता हैं।

(यह श्लोक हमारे गुरु महाराज को अत्यंत प्रिय था, क्योंकि वे इस अनिर्वचनीय आनंद को अनुभव करते रहते थे।)

You are the ultimate Reality which all seekers reach after long strenous yogic discipline and breath-control. In the process they are thrilled and their eyes are filled with tears of joy. On full realization the seekers are merged in bliss indescribable!

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह -
स्तवमापस्त्वं व्योमत्वमु धरणिरात्मा त्वमिमिति च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥२६॥

महाकवि कालिदास जैसे महान शिवभक्त के स्वर मिलाकर पुष्पदन्त जी आपकी स्तुति में कहते हैं कि-- भगवान आप ही सूर्य हैं, चंद्र हैं, जल हैं, पवन हैं, अग्नि हैं, आकाश, पृथ्वी और आत्मा भी आप ही हैं। लेकिन मेरे विचार से इस प्रकार का वर्णन करकें वे असीम ईश्वर को एक सीमा में बांध रहे हैं। हमारे अपने विचार में जगत में ऐसा कोई तत्व है ही नहीं जो साक्षात् आपका स्वरूप न हो या आपसे भिन्न हो।

Wise men and intellectuals may discuss or argue about you in different ways calling you with different names and elements, but I feel that there is nothing in this vast universe which is not pervaded by you!

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा -
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत् तीर्णविकृति ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ॥२७॥

हे शरण देने वाले ! (अभय प्रदान करने वाले शंकर !) 'अ', 'उ' और 'म' इन तीन अक्षरों से बना हुआ ओम् शब्द तीनों वेद (ऋक्, यजु और साम), तीनों अवस्थाओं (जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति), तीन लोकों (भू, अंतरिक्ष, द्यौ), तीन शरीरों (स्थूल, सूक्ष्म और कारण) और तीनों देवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) का ही प्रतिपादन करता है। अ, उ और म इन तीनों अक्षरों के मिले हुए रूप से आपका स्वरूप ओम् रूप से निर्विकार, निष्कल और स्वरूप से रहित आपके तुरीय स्वरूप का ही प्रतिपादन होता है। अतः स्पष्ट है कि आप ओम् के स्वरूप को ही दर्शाते हैं।

O Giver of Refuse! The three vedas (*Rig, Sām and Yajur*), three states (waking, dreaming and sleeping), three lokas (Bhuh, Bhava, Svah), Trinity (Brahmā, Viṣnu and Rudra) and three letters of AUM, all point to your manifest and unmanifest forms in this vast universe.

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां -
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहितनमस्योऽस्मि भवते ॥२८॥

हे देव ! वेद और पुराणों में आपको भव (संसार का रचयिता), शर्व (भक्तों को सुख देने वाले), रुद्र (दुष्टों को रुलाने वाले), पशुपति (जीव रूपी पशु के स्वामी), उग्र (तेजस्वी), सहमान (महादेव), भीम (भयंकर), ईशान (संसार का शासक) जैसे नामों से स्मरण किया गया है। ये प्रत्येक नाम आपकी सर्वोत्कृष्टता के सूचक हैं। ऐसे सबको शरण देने वाले परमप्रिय शिव ! मैं मन से (ध्यान करके) वाणी से (स्तुति करके) और शरीर से (साष्टांग) आपको प्रणाम करता हूं।

O Lord! you are named as Bhava, Śarva, Rudra, Paśu-pati, Ugra, Mahādeva, Bhīma and Aśani in Vedas. I humbly offer my salutations to the Lord Almighty of thousand names, who is self-luminous and Omnipotent.

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव! दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति सर्वाय च नमः ॥२९॥

हे निर्जन (एकान्त) प्रिय शिव ! भक्तों के लिए आप ही सबसे निकट हैं। आपको हमारा प्रणाम! हे काम का नाश करने वाले शिव ! आपको हमारा प्रणाम! आपके सबसे लघु रूप और आपके सबसे महान रूप को हम प्रणाम करते हैं।

सूर्य, चन्द्र और आग तीनों ही आपके तीन नेत्र हैं। बूढ़ों में आप सबसे बूढ़े और जवानों में सबसे अधिक जवान हैं। आपको हम इन सभी रूपों में प्रणाम करते है। सच तो यह है कि इस जगत में ऐसा कौन रूप है जिसमें आप नहीं हैं (आपका वर्णन कौन कर सकता है?) हम तो केवल सब रूपों में आपको प्रणाम ही कर सकते हैं।

O Dweller, of Solitude! You are nearest to the near, farthest to the farthest. I salute you who reduces Kāmadeva to ashes! I salute you in the lowest and the highest! I salute you in all shapes and forms! I salute you feeling and knowing you as Omnipresent and Omniscient and as transcending all!

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥ ३० ॥

हे भव ! (संसार को जन्म देने वाले !)
संसार का निर्माण करने के लिए आप ही ब्रह्मा का स्वरूप ले लेते है जिनमें रजोगुण की प्रधानता है। इसी प्रकार संहार करने के लिए तमोगुण की प्रधानता लेकर आप हर रूप से संहार कर डालते हैं। विष्णु रूप से आप सत्व गुणों की प्रधानता लेकर संसार का पालन करते हैं। इसके अतिरिक्त सत्व, रजस और तमोगुण से सर्वथा दूर रहकर आप माया से शून्य शिव रूप में रहते हैं। ऐसे भगवान शंकर को हम बार-बार प्रणाम करते हैं।

I adore you in your Brahma aspect predominating in *Rajas* for creating the universe. I adore you in *Rudra* Predominating in Tamas for dissolution of the universe. I adore you in your Vinu aspect predominating in *Sattwa* for the preservation and sustenance of the universe and I revere you as Self-luminous fountain of Light and Truth, beyond all the three attributes (guṇ as)!

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥ ३१ ॥

हे वरद ! (वरदान देने वाले शिव !)
कहां तो मेरे जैसा शक्तिहीन अल्पज्ञानी जिसके मन में हजारों रागद्वेष भरे हैं और कहां आपके नित्य रहने वाले अनन्त असीम गुण? जिनकी महिमा तथा ऐश्वर्य का कौन वर्णन कर सकता है? मै तो अपनी क्षुद्रता पर चकित-सा रह जाता हूं। मैने तो प्रयास किया हैं कि अपनी मन्दबुद्धि को त्यागकर तथा अपनी भक्ति से आपके चरणों में ये वाक्य रूपी पुष्प चढ़ाऊँ।

O Giver of boons! My immature and flickering mind is filled with so many disturbing thoughts of misery, while your blessings and virtues are countless! I wondered at my nothingness, when your devotion prompted me to offer this hymn of praise at your holy feet!

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रं
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश! पारं न याति ॥ ३२ ॥

हे ईश ! कुछ असंभव-सी प्रतीत होने वाली लेखन-सामग्री लेकर आपके गुणों की महिमा लिखने का निरन्तर प्रयास करने के लिए मैं विद्या की देवी भगवती सरस्वती से प्रार्थना करूं तो भी वे आपके गुणों को नहीं लिख पाएंगी, चाहे इसके लिए उन्हें सभी काले पर्वतों का स्याही, सभी समुद्रों को दवात, और धरती को ही कागज तथा देवताओं के कल्पवृक्ष को कलम ही क्यों न बनाना पड़े।
भगवान शिव की महिमा गाने के लिए अब इससे अधिक पुष्पदन्त क्या कहें अतः वे इस स्तोत्र को यहीं समाप्त करते हैं।

In the sea is made to serve as an inkpot, by mixing black mountain, earth is used as paper, and Saraswati (Gooddess of Learning) sets out herself to write your glories by a pen made of *Kalpa vṛkṣa* (heavenly tree) from age to age, she will not be successful in describing all your virtues.

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौलेर् -
ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
सकलगणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥ ३३ ॥

देव, दानव तथा मुनियों से पूजित गुणों की महिमा वाले, निर्गुण भगवान चन्द्रशेखर शिव की महिमा के इस सुन्दर स्तोत्र को सभी गंधर्वों के राजा पुष्पदन्त ने बड़े अक्षरों में शिखरणी छन्द में बनाया।

Puspadanta, Gandharva (heavenly musician) vested with virtues, has composed this beautiful hymn in small stanzas (*chandas*) to praise in Nirguna form, Lord Śiva, who is adored by gods, demons and the best of sages.

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्त्रोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च ॥ ३४ ॥

जो मनुष्य शुद्ध चित्त से तथा परमभक्ति भाव से शिव के इस निर्दोष स्तोत्र का नित्य पाठ करेगा, उसे इस लोक में पर्याप्त धन व दीर्घायु तो मिलेगी ही, वह पुत्रवान् यशस्वी होकर शिव लोक में शिव हो जाएगा।

He who recites this beautiful hymn with full devotion, and purified heart, everyday, will become (after his death) like Śiva in the abode of Siva. He will also be blessed with long life, worthy sons and fame in this world.

महेशान्नाऽपरो देवो महिम्नो नाऽपरा स्तुतिः ।
अघोरान्नाऽपरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥ ३५ ॥

शिव से बढ़कर कोई देवता नहीं, महिम्न स्तोत्र के समान कोई दूसरा स्तोत्र नहीं। यजुर्वेद में रुद्राष्टाध्यायी के अघोर मंत्र "प्रणव" जैसा अन्य मंत्र नहीं। गुरु के समान अन्य कोई तत्व नहीं।

There is no God, superior to Lord Sankara! There is no praise superior to this Mahimnah Stotram. There is no *mantra* (secret word) superior to Aghora mantra (well-known vedic mantra praising Siva in the form of Rudra). There is nothing better to be known then the real nature of the spiritual teacher (Guru).

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः।
महिम्नः स्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ ३६ ॥

मंत्र दीक्षा लेना, दान देना, तप करना, तीर्थयात्रा करना ज्ञान प्राप्त करना और यज्ञ करने से मिलने वाला फल शिव महिम्न स्तोत्र के पाठ करने से मिलने वाले फल के सोलहवें हिस्से के भी बराबर नहीं हैं।

Giving of alms, tap (austerities) pilgrimage, reading of holy books and performance of sacrificial rites, are not equal to one sixteenth part of the merit which a reciter derives from the repetition of this hymn on the sublimity of Śiva's majesty!

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुशशिधरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥ ३७ ॥

दूज के नये नये चाँद को शिर पर धारण करने वाले "शिव" के क्रोध से महादेव के दास गन्धर्वराज पुष्प दन्त को अपने पद से हाथ धोना पड़ा, उसने शिव को प्रसन्न करने के लिए उनकी महिमा वाले इस स्तोत्र की रचना की जिससे उसे अपना पद फिर से मिल गया।

It is said that Puspadanta a musician, lost his power of flying in the air as he trod on the flowers left after Siva's worship and incurred the displeasure of the Lord. but when he prayed to Lord Śiva with this hymn he regained his lost powers!

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥ ३८ ॥

बड़े-बड़े देवताओं और ऋषि मुनियों से पूजित तथा स्वर्ग और मोक्ष देने वाले भगवान शंकर के इस अमोघ (कभी निष्फल न जाने वाले) स्तोत्र को जो व्यक्ति एकाग्रचित होकर करबद्ध अवस्था में पढ़ेगा, उसकी किन्नर भी स्तुति करेंगे और वह (मरने के बाद) शिवलोक में जाता हैं।

If this hymn which is applauded by devas and sages is recited, with humility and devotion, the reciter goes to Śiva, being worshipped by Kinnaras (beings who got a human form, but with horse-like head)

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

सूर्य संसार को प्रकाशित करता है, पर बादल का एक छोटा-सा टुकड़ा भी उसे हमारी नजर से ओझल कर देता है, उसी प्रकार माया का तुच्छ-सा आवरण भी हमें सर्वव्यापी, सर्वसाक्षी, सच्चिदानन्द को नहीं देखने देता।

★ श्री रामकृष्ण ★

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

शिव परिवार

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभषितम् ।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरणवर्णनम् ॥ ३९ ॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छंकरपादयोः
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ॥ ४० ॥

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर ।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ॥ ४१ ॥

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ॥ ४२ ॥

श्रीपुष्पदन्तमुखपंकजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥ ४३ ॥

गंधर्व राज पुष्प दंत द्वारा कहा गया यह स्तोत्र परमपवित्र, अनुपम, अतुलनीय और मनोहर है। शिव महिमा से पूर्ण इस स्तोत्र को यहां समाप्त समझिए।

भगवान शंकर के चरण कमलों में मेरी यह वाणी भरा पूजा अर्पित है, इससे स्तुति से देवताओं के स्वामी भगवान सदाशिव प्रसन्न हो! प्रसन्न हो!!

हे भगवान महेश्वर! आपका वास्तविक स्वरूप क्या है? यह मैं नही जानता, मैं तो मात्र इतना ही जानता हूँ कि आप को जो भी स्वरूप हो मैं उसे प्रणाम करता हूँ! प्रणाम करता हूँ!!

जो भक्त इस स्तोत्र को प्रातः दोपहर ओर सायं तीनों समय पढ़ता है, वह सभी पापों से मुक्त हो कर शिवलोक को जाता है।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

श्री पुष्प दंत के कमल जैसे मुख से निकला हुआ यह स्तोत्र पापों को हरने वाला है तथा शिव को अत्यंत प्रिय है। जो व्यक्ति मन लगाकर इसे नित्य पढ़ेगा, उस पर समस्त प्राणियों के स्वामी भगवान शंकर की कृपा होती है क्योंकि इसे सुनकर शिव अत्यंत प्रसन्न हो जाते हैं।

This sacred hymn, composed by Puspadanta, describing the glory of Śiva is fascinating.

This hymnal worship is offered at the feet of Lord Śiva. May the ever-propitious Lord of gods be pleased.

O, Śiva! I do not know the true nature of your being. Oh, Great God, my salutations to you again and again!

A devotee who recites this hymn once or twice, goes to the abode of Śiva (after death) and remains there in perfect joy.

A devotee who learns it by heart, reads or keeps at home this hymn composed by Puspadanta, becomes dear to Lord Śiva and his sins are destroyed.

Here ends the hymn on the Greatness of Śiva.

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

आत्म समर्पण

अध्यात्म की बातें बुद्धिवाद के साथ जोड़ी नहीं जा सकतीं। अध्यात्म बुद्धि से परे की चीज है। द्रौपदी के पक्ष में भगवान ने चमत्कार तब किया, जब द्रौपदी ने पूर्ण रूप से आत्म समर्पण कर दिया। धर्म का वास्तविक रहस्य आत्म-समर्पण है।

.........*महर्षि रमण*

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri